हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-I (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL1

Name: Ravi Kumar Sihag **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AwaKe-19 | B1

Center & Date: Delhi 22|07|19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1111762

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप

हिन्दी साहित्येतिहास में सिद्धों का योगदान साहित्य के अन्य स्तरों के साथ-साथ खड़ी बोली के विकास के रूप में भी है। मध्य-प्रदेश के पूर्वी भाग में सातवीं-आठवीं शताब्दी में धार्मिक भावनाओं के प्रचार हेतु सरहपा, कण्हपा, लुईपा ने अपने दोहों व चर्यापदों के रूप में जो साहित्य रचा, उसे सिद्ध साहित्य कहते हैं। इनकी संख्या प. राहुल सांकृत्यायन ने 84 बताई है।

सिद्धों के भाषा प्राकृताभास अपभ्रंश मानी जाती है किन्तु इसमें भी खड़ी बोली बीज रूप में विद्यमान है। इनके प्रमुख चर्यापदों में ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ खड़ी बोली के तत्व शब्दावली के स्तर पर ही दिखाई देते हैं, व्याकरणिक या अन्य स्तर पर नहीं। उदाहरण के लिये –

"घर ही बईसी दीवा जाली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोनहि बईसी घंटा चाली।"

इसमें प्रमुख शब्द जैसे दिबा, घंटा, घर आदि खड़ी बोली में भी ज्यों के त्यों दिखाई पड़ते हैं। साथ ही 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग भी खड़ी बोली की प्रमुख विशेषताओं में से एक है।

इसके अलावा सरहपा का एक अन्य पद भी यही आभास कराता है -

"पंडित सअल सत्त बक्खाणअ
देहहिं बुद्ध बसंत न जाणअ"

यहाँ भी 'ण' का प्रयोग व 'पंडित' जैसे कुछ शब्द खड़ी बोली का प्रारंभ सुनिश्चित करते प्रतीत होते हैं।

इस प्रकार अल्प स्तर पर ही सही किन्तु खड़ी बोली के बीज सिद्धों की रचनाओं में मिलते हैं जो इसके आगामी विकास के प्रस्थान बिन्दु हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिन्दी के भाषा क्षेत्र पर यदि विचार करें तो इसमें केवल वे ही क्षेत्र नहीं आते जहाँ हिन्दी बोली, पढ़ी व समझी जाती है, बल्कि अन्य प्रमुख क्षेत्र भी इसमें समाहित किये जाते हैं।

प्रथम स्तर पर वे क्षेत्र जहां हिन्दी 'प्रमुख' व 'प्रथम' भाषा के रूप में विद्यमान हैं जैसे - उत्तर भारत के राजस्थान, बिहार, हरियाणा जैसे 10 राज्य। यहाँ पर उत्तर में गढ़वाल से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र के उत्तरी भाग भी आते हैं तो पूर्व में अम्बाला से लेकर पूर्णिया तक के क्षेत्र।

द्वितीय रूप में वे राज्य हैं जहाँ हिन्दी प्रथम भाषा नहीं है किन्तु बोली व समझी जाती है जैसे - बंगाल, असम, कर्नाटक जैसे राज्य। इन सभी राज्यों की भाषाओं के साथ हिन्दी का बहनों वाला संबंध है क्योंकि इन सभी का विकास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समान ऐतिहासिक प्रक्रिया से हुआ है।

तीसरे स्तर पर भारत के बाहर के वे देश हैं जहाँ हिन्दी बोली व समझी जाती है जैसे - फिजी, मॉरिशस, त्रिनिदाद व टोबैको।

चौथे स्तर पर वे क्षेत्र (अन्तर्राष्ट्रीय) आते हैं जहाँ पर हिन्दी का अध्ययन व अध्यापन कार्य होता है जैसे - रूस, ब्रिटेन, अमेरिका जैसे 40 के करीब देश।

इस प्रकार कुल मिलाकर हिन्दी के सामान्य व साहित्यिक भाषा के प्रयुक्ति के क्षेत्रों को मिलाकर हिन्दी भाषी क्षेत्र की जनसंख्या 1.2 अरब के बराबर है जो कि हिन्दी को विश्व की प्रमुख भाषाओं के समक्ष स्थित करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

खड़ी बोली से विकसित व देवनागरी में लिखी जाने वाली आधुनिक हिन्दी के मानकीकरण की प्रक्रिया पिछले दस से पन्द्रह दशकों का परिणाम है।

भारतेन्दु युग में यूँ तो हिन्दी को गद्यभाषा के स्तर पर खड़ी बोली के रूप में स्थापित किया गया था किन्तु यहाँ पर मानकीकरण के प्रयास न के बराबर थे अतः यहाँ के भाषा में निम्न कमियाँ थी-

(i) शब्दों की प्रयुक्ति का दोष।

(ii) एक राजे, मुझे मार डालने चाहती है जैसे वचन लिंग दोष।

(iii) सम्ता - सकता, उन्हें आदि सर्वनामिक दोष।

(iv) अन्वयहीनता

1893 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के स्थापित होने के बाद इसके द्वारा संचालित पत्रिका 'सरस्वती' के मुख्य संपादक बनने होने के नाते महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली की शुद्धता को आंदोलन की तरह चलाया। उन्होंने यह कार्य दो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्तरों पर शुरू किया।

(क) गद्य व पद्य दोनों में खड़ी बोली का प्रयोग करना।

(ख) अपने लेखों व साथियों के सहयोग से मानकीकरण के प्रयास जैसे-

- अरबी -फारसी के लोकप्रचलित शब्दों को ज्यों का त्यों स्थापित करना।
- परसर्गों को संज्ञा से अलग व सर्वनाम के साथ लिखना।
- भावै, दूजियै, लीजै जैसे प्रयोग समाप्त करना।
- लिंग - वचन के स्तर पर मानकीकरण।

इन्हीं के प्रयासों से कामताप्रसाद गुरु व किशोरीदास वाजपेयी ने खड़ी बोली हिन्दी के आरंभिक व्याकरण लिखे।

इस प्रकार शुक्ल जी ने कहा है- "महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के शुभ प्रभाव का स्मरण हिन्दी में तब-तक, जब तक भाषा में शुद्धता आवश्यक समझी जायेगी, किया जायेगा।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में 'ब्रह्म समाज' का योगदान

राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित 'ब्रह्म समाज' ने भारतीय एकता समाज सुधार के प्रयासों को उद्वेलित करने के लिये हिन्दी के द्वारा देश को एकमत करने का प्रयास किया।

इसी समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने 1815 में 'वेदांतसूत्र' का हिन्दी में अनुवाद किया एवं 1828 में 'बंगदूत' नामक पत्र के माध्यम से हिन्दी के पक्ष में आवाज उठाई।

इनके शिष्यों में नवीनचन्द्र राय ने पंजाब में हिन्दी के प्रचार का कार्य किया व 'ज्ञानप्रदायिनी' पत्रिका (1867) के माध्यम से हिन्दी विकास को गति दी।

अन्य शिष्य केशव सरकार ने बिहार में शिक्षा व न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग को लेकर 'आचार प्रबन्ध' नामक ग्रन्थ के माध्यम से गंभीर प्रयास किये।

आगे चलकर इसी समाज के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुरोधा नेता 'केशवचन्द्र सेन' ने हिन्दी के पक्ष में कहा कि -

"भारतवर्ष की एकता कैसे हो - उपाय यह है कि इस समग्र भारत में जितनी भाषाएं प्रचलित हैं, हिन्दी उनमें से सबसे अधिक प्रचलित होने वाली भाषा है। हिन्दी के माध्यम से यह कार्य शीघ्रता से सम्पन्न हो सकता है।"

इन्हीं के कहने पर 'दयानन्द सरस्वती' ने अपनी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिन्दी में लिखकर हिन्दी में तर्क-वितर्क शैली का विकास किया।

-इस प्रकार अपने व अपने अनुयायियों के द्वारा ब्रह्मसमाज का हिन्दी के विकास में अप्रतिम योगदान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'हरियाणवी बोली'

पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोलियों में प्रमुख स्थान रखने वाली यह बोली खड़ी बोली के विकास के साथ-साथ अपनी कुछ विशेषताओं में अनन्य है। जार्ज ग्रियर्सन ने इसे 'बांगरू' नाम दिया।

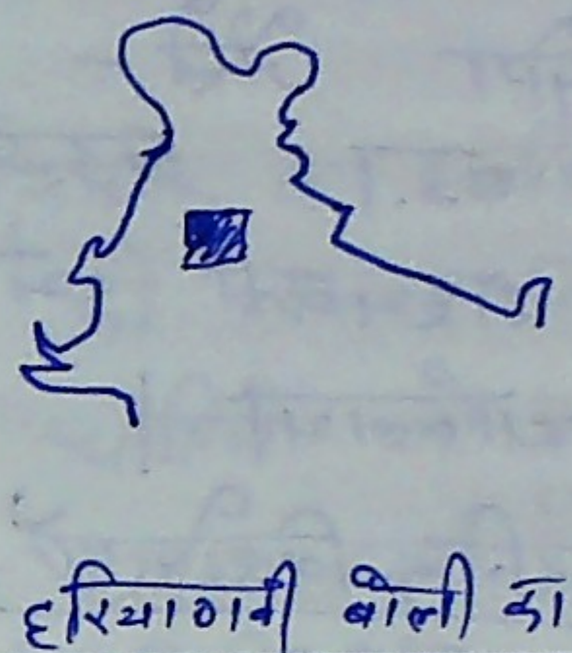

हरियाणवी बोली का क्षेत्र

प्रचलित क्षेत्र - अम्बाला, पानीपत, सोनीपत, हिसार के साथ-साथ दिल्ली के कुछ क्षेत्र।

प्रमुख विशेषताएँ

ध्वनिगत विशेषताएँ

(क) 'ट' वर्ग बहुलता भाषा।

(ख) 'ण', 'ळ' का प्रमुखता से प्रयोग।

उदा- कौन - कौण, बालक - बाळक

(ग) आदि स्वर के लोप का होना।

उदा० इकट्ठा - कट्ठा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iv) ड., ढ. के स्थान पर ड., द, का प्रयोग जैसे -
बड़ा - बड्डा
(v) मध्यवर्ती व्यंजन का द्वित्वीकरण जैसे - चाल्लया।

व्याकरणिक विशेषताएँ

+ सर्वनामों के स्तर पर ये, वो, वू, इस्नै जैसे प्रयोग
+ कर्त्ता के साथ ने परसर्ग का प्रयोग
+ भूतकाल क्रिया - 'अ' रूप - करया
वर्तमान क्रिया - करै, भरै जैसे प्रयोग
भविष्य क्रिया - 'गा' रूप - करैगा।
+ स्त्रीलिंग बनाने के लिये ई, अन प्रत्यय - होरी, मालण आदि।

इस प्रकार अपनी प्रभुत्व के क्षेत्र के साथ-साथ शौरसेनी प्राकृत से उत्पन्न यह बोली अपनी विशिष्ट विशेषताएँ रखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि का दर्जा दिलाने वाली विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

किसी भी भाषा को सार्वकालिक व सार्वदेशिक बनाने के लिये लिपि की ज़रूरत पड़ती है। लिपि ऐसी होनी चाहिये जो अपने स्तर पर वैज्ञानिकता को धारण करती हो। देवनागरी इसी प्रकार की लिपि है।

*देवनागरी में निहित वैज्ञानिकता

(क) देवनागरी में वर्णों का क्रम अत्यन्त वैज्ञानिक है। इसमें निहित सभी व्यंजन उच्चारण स्थान के अनुरूप वर्गों में विभाजित हैं, जबकि अंग्रेजी में ऐसा कोई क्रम नहीं मिलता।

'क' वर्ग - कण्ठ से उच्चारित
'च' वर्ग - तालु से उच्चारित
'ट' वर्ग - मूर्धन्य उच्चरित
'त' वर्ग - दन्त से उच्चारित

(ख) दूसरा कारण जो इसकी वैज्ञानिकता को सिद्ध करता है वह यह है कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसमें सबसे पहले स्वर आते हैं, उसके बाद व्यंजन। अत: उच्चारण की सरलता से कठिनाई की ओर वर्णों का क्रम बढ़ता जाता है, जबकि अंग्रेजी के स्वर (A, E, I, O, U) व्यंजनों के बीच में विद्यमान है।

(ग) इसमें एक ध्वनि के लिये एक ही चिह्न की व्यवस्था है किन्तु अंग्रेजी में 'उ' की ध्वनि यू (U) से भी प्रदर्शित होती है तो कभी डबल ओ (OO) से भी।

(घ) एक चिह्न एक ही ध्वनि को प्रदर्शित करता है जबकि अंग्रेजी में ई (e) का प्रयोग 'ई' के लिये भी होता है तो 'ए' के लिये भी।

(ङ) मात्रा व्यवस्था:- 'प्रयत्नलाघव' व 'स्थानलाघव' की दृष्टि से यह व्यवस्था विश्व की अन्य लिपियों पर भारी पड़ती है जैसे रोमन में अमेरिका लिखना हो तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ज्यादा वर्ण लगेंगे AMERICA जबकि देवनागरी में कम।

(च) शिरोरेखा :- शिरोरेखा के कारण वाक्य के शब्दों के अर्थ में अंतर विद्यमान रहता है। यदि यह व्यवस्था न हो तो शब्दों के मेल से दुविधा की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

(छ) यह लिपि सीखने में अत्यन्त आसान है। एक सीधी रेखा (।), एक आड़ी रेखा (—) व एक अर्द्धचन्द्र (◡) के अभ्यास से लगभग हर अक्षर को सीखा जा सकता है।

(ज) संयुक्त वर्णों का प्रयोग - क्ष, त्र, ज्ञ, श्री जैसे संयुक्त वर्णों के कारण रोमन लिपि की अपेक्षा देवनागरी में समय व स्थान की भारी बचत होती है।

(झ) इस लिपि का मिज़ाज ऐसा है कि इसमें लोचशीलता की गुंजाईश है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अर्थात. नयी ध्वनियों को समाहित करना आसान हो जाता है जैसे अंग्रेजी ध्वनि ऑ को 'आ' के ऊपर चन्द्र (ॅ) लगाकर लिखा जा सकता है।

अतः निम्न विशेषताओं के कारण ही काका कालेलकर जैसे महानुभावों ने देवनागरी को विश्व में सबसे वैज्ञानिक लिपि बताया।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बुन्देली' बोली का परिचय दीजिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शौरसेनी प्राकृत →
शौरसेनी अपभ्रंश →
पश्चिमी हिन्दी
उपभाषा →
बुंदेली बोली।

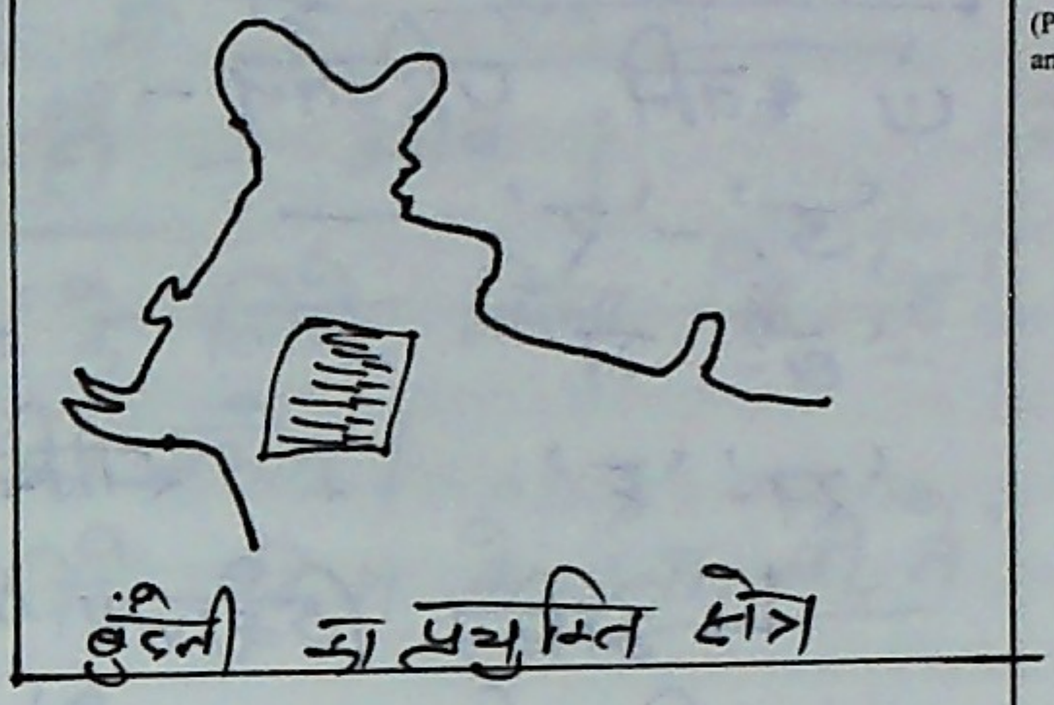

बुंदेली का प्रयुक्ति क्षेत्र

प्रयुक्ति के क्षेत्र की बात की जाये तो बुंदेली हिन्दी की सभी बोलियों में सबसे अधिक क्षेत्र विस्तार वाली बोली है। इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश के ग्वालियर, बालाघाट जैसे ज़िले आते हैं, उत्तर-प्रदेश के झांसी जैसे ज़िले भी आते हैं तो महाराष्ट्र के नागपुर जिले स्थानों पर भी इसके प्रयोक्ताओं की संख्या पाई जाती है।

इसकी विशेषताओं में सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसके विकास में अन्य पास की बोलियों का भी योगदान प्रमुख रूप से दिखाई पड़ता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ध्वनिगत विशेषताएँ :-

(i) ध्वनि परिवर्तन - उदा०

'ड' - 'र' - झगड़ा - झगरो

'ब' - 'म' - बबूल - बमूरा

'स' - 'ह' - सीढ़ियाँ - हिड़ियाँ

↳ अंतिम विशेषता पर <u>छत्तीसगढ़ी</u> का प्रभाव दिखाई पड़ता है

(ii) शब्दों के स्तर पर <u>ओकारांतता</u> की प्रवृत्ति

उदा० - घोड़ो, झगरो ।

(iii) <u>महाप्राण का अल्पीकरण</u> (द्रविड़ी से प्रभावित) - उदा०

हाथ - हात

(iv) इस बोली में मध्यवर्ती '<u>ह</u>' व्यंजन का लोप हो जाता है जैसे -

चाहत - चाउत

(v) इसमें '<u>ऐ</u>' व '<u>औ</u>' की प्रवृत्ति संध्यक्षरों (बैल - बइल) के रूप में भी होती है व सरल रूप (बेल) में भी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक विशेषता :-

(i) सहायक क्रियाओं में 'ह' तत्व का लोप।
उदा० हूँ - औं, हौं - आव।

(ii) भविष्य काल के लिये क्रिया के 'ह' व 'ग' रूपों का प्रयोग।

(iii) वर्तमान के लिये क्रिया के 'ता, ती, ते' रूपों का प्रयोग।

(iv) वर्तमान काल में 'करत' जैसे क्रियारूप

(v) सर्वनामों के स्तर पर दक्खिनी व राजस्थानी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है

(vi) स्त्रीलिंग में ईकरान्त व इकरान्त रूप

इस प्रकार अपनी कुछ विशिष्ट व अन्य बोलियों से प्रभावित विशेषताओं के साथ बुंदेली भारत की बड़ी जनसंख्या की समेटती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी की 'विशेषण-व्यवस्था' पर प्रकाश डालिये। 15

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करने वाले या बताने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है। जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की ये विशेषता बताते हैं उन्हें 'विशेष्य' कहते हैं जैसे - वह अच्छा लड़का है।
(विशेषण) (विशेष्य)

विशेषण के भेद :- हिन्दी में विशेषण के चार भेद माने जाते हैं जो निम्न है-

1) **गुणवाचक विशेषण** :- ये किसी संज्ञा या सर्वनाम के रंग, स्वरूप आदि का विवेचन करते हैं जैसे -
राम काला है।
श्याम लम्बा है।

2) **सार्वनामिक विशेषण** :- ये वे विशेषण होते हैं जो अपने सार्वनामिक रूप में अन्य शब्दों की विशेषता बताते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे कितने लंबे हो तुम ?

इनके चार प्रकार होते हैं

सार्वनामिक विशेषण

- संबंधवाचक — 'जो' कल मांगी थी, 'वही' चाहिये।
- प्रश्नवाचक — 'कौनसी' पुस्तक चाहिये ?
- निश्चयवाचक — 'यही' पुस्तक चाहिये।
- अनिश्चयवाचक — 'कोई' पुस्तक चाहिये

3) संख्यावाचक विशेषण :- जो किसी संख्यात्मक (जातिवाचक) संज्ञा की विशेषता बताये। इसके दो प्रकार हैं

- निश्चयात्मक संख्यावाचक — पाँच किताबें
- अनिश्चयात्मक संख्यावाचक — कुछ लोग

4) परिमाण वाचक विशेषण :- द्रव्यवाचक संज्ञा की विशेषता बताते हैं। दो भेद

- निश्चयात्मक — '1 लीटर' पानी दो
- अनिश्चयात्मक — 'थोड़ा' पानी दो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अन्य विशेषताएँ :-

(क) गुणवाचक व सार्वनामिक विशेषण ही लिंगवचनानुसार विकारी होते हैं, अन्य नहीं जैसे, काला आदमी, काली औरत काले आदमी।

(ख) उद्देश्य व विधेय विशेषण :- जो विशेष्य से पूर्व आये वह उद्देश्य विशेषण होता है जैसे - वह सुंदर लड़की है। जबकि जो विशेष्य के बाद आये वह विधेय विशेषण होता है जैसे- वह लड़की सुंदर है

(ग) प्रविशेषण :- विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द जैसे-
वह बहुत सुंदर मूर्ति है।

(घ) क्रिया विशेषण :- जो क्रिया की विशेषता बताये जैसे -
वह तेज दौड़ती है

इस प्रकार हिन्दी की विशेषण अवस्था पूर्णतः वैकल्पिकता को धारण कर हिन्दी व्याकरण को समृद्ध बनाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मध्यकालीन आर्यभाषाओं की अंतिम अवस्था के रूप में अपभ्रंश का आरंभ होता है। वस्तुतः अपभ्रंश का आरंभ 5 वीं शताब्दी से होकर इसका अंत 11 वीं - 12 वीं शताब्दी तक चलता रहता है। अनेक स्तरों पर अपभ्रंश ने आधुनिक हिन्दी व इसके साहित्य में योगदान दिया है।

भाषा के स्तर पर
- वियोगात्मक भाषा।
- परसर्गों का प्रयोग।
- ध्वनि व्यवस्था में। नई ध्वनियों का आना।
- शब्दावली के स्तर पर।
- व्याकरणिक स्तर पर।
- साहित्य के स्तर पर।

साहित्य के विकास में अपभ्रंश का योगदान

D संवेदना के स्तर पर

(क) चरित मूलक काव्य परंपरा :- जैन कवियों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे पुष्पदंत स्वयंभू आदि ने जिन चरितमूलक काव्यों अर्थात. 'परमचरिउ', 'णायकुमार चरिउ' की स्थापना की; साथ ही रासो काव्यधारा में भी चरित्र वर्णन के गुणों का प्रभाव आगामी चरित्रमूलक महाकाव्यों जैसे 'रामचरितमानस' पर पड़ता है।

(ख) धार्मिक काव्यधारा के रूप में हेमचन्द्र व पुष्पदंत के साथ-साथ सिद्धों व नाथों की रचनाओं का प्रभाव आगामी रचनाकारों पर पड़ा। कबीर की अक्खड़ता व अभिव्यक्ता पर नाथों का प्रभाव दिखाई पड़ता है तो सूरदास के काव्य पर विद्यापति की रचनाओं का प्रभाव सर्वविदित है। नाथों की संधा भाषा' का ही अगला रूप कबीर की उलटबांसी है।

(ग) लोककाव्य की प्रचुरता :- जैनों के काव्यों के साथ-साथ रासो काव्यधारा में जो लोककाव्य का स्वरूप दिखाई पड़ता है, वही आगे चलकर 15वीं शताब्दी में 'ढोला

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

माऊ रा दूहा' में दिखाई पड़ता है।

(घ) रासो काव्यधारा में जो वीरकाव्य दिखाई पड़ता है वही वीरकाव्य आगामी रीतिकालीन वीरकाव्यधारा का आधार तैयार करता है।

शिल्प के स्तर पर :

(क) काव्यरूप :- रासो काव्य में पृथ्वीराज रासो जैसे महाकाव्य का प्रभाव आगामी रामचरितमानस के साथ-साथ कमायनी जैसे महाकाव्यों पर पड़ा है।

(ख) छंद :- छंदों के स्तर पर दोहा व चर्यापदों का विकास हुआ जो आगे चलकर भक्ति व रीतिकाल के काव्यों का आधार बनाने। अन्य रूपों में कुलक, पद, चाँचरी फाग आदि का प्रभाव हुआ तुलसी (कुलक में 'रामलला नहछू') पद (सूरदास) व चाँचरी (कबीर) पर पड़ता है।

(ग) शुक-शुकी संवाद, आकाशवाणी (रासो काव्यधारा) जैसी काव्य रूढ़ियों का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विकास हुआ। जायसी के काव्यों पर इनका प्रभाव दिखाई देता है।

(घ) दोहा- चौपाई की कड़वक बद्ध शैली का विकास स्वयंभू जैसे कवियों ने किया। वही आगे चलकर जायसी व तुलसी के काव्यों का आधार बनी।

इस प्रकार अनेक स्तरों पर अपभ्रंश ने हिन्दी साहित्य परंपरा को समृद्ध बनाने में योगदान दिया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अपने जीवन के युवाकाल से ही मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपना सर्वस्व देने वाले सेठ गोविंददास का नाम हिन्दी जगत में अमूल्य स्थान रखता है। इन्होंने न केवल अपने स्तर पर बल्कि अपने सहयोगियों की फौज के द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा के स्तर पर पहुँचाने का कार्य किया।

प्रमुख योगदान के बिन्दु :-

(क) उन्होंने मात्र 20 वर्ष की आयु में हिन्दी के लिये जबलपुर में 'शारदा सदन' नामक पुस्तकालय की स्थापना की।

(ख) पत्रों के स्तर पर :- राष्ट्रभाषा के विकास के लिये इन्होंने 'जयहिन्द', 'लोकमत' व 'शारदा' जैसे पत्रों का संपादन किया व आंदोलन चलाया।

(ग) हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दिलाने की बात केन्द्रीय अवस्थापिका में करने वाले आप ही थे (1927)। इससे पहले यह मुद्दा इस मंच पर कभी उठा ही न था।

(घ) आजादी के समय भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा व राजभाषा का दर्जा दिलाने को लेकर इन्होंने अनेक लेख छापे व व्यापक प्रचार - प्रसार किया।

(ङ) 1968 में जब हिन्दी विरोधी आंदोलन चरमपर था तो सेठ जी ने ही देश में जगह - जगह घूम कर हिन्दी के पक्ष में आवाज उठाई व हिन्दी का नारा बुलंद किया।

अन्ततः इनके समर्पण का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हिन्दी के पक्ष में मतदान देने के लिये संविधान सभा में इन्होंने कांग्रेस के व्हिप का उल्लंघन करने की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुमति ली। इनका प्रमुख व प्रसिद्ध वाक्य है -

"जब तक हम अपना जीवन जननी हिन्दी को समर्पित न करें तब तक हम हिन्दी के सच्चे प्रेमी नहीं कहे जा सकते xxxx हमारी हिन्दी भारत की ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'छत्तीसगढ़ी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

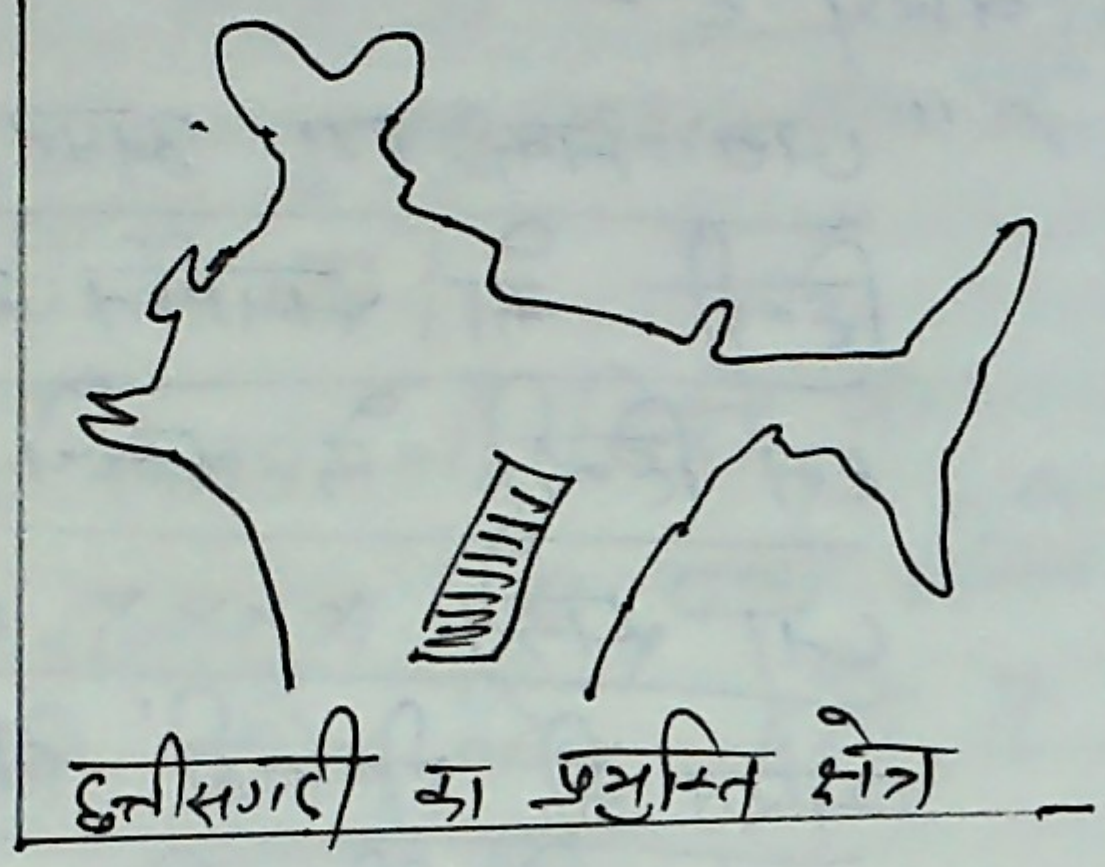

अर्द्धमागधी
अपभ्रंश
↓
पूर्वी हिन्दी
उपभाषा
↓
- अवधी
- बघेली
- छत्तीसगढ़ी

छत्तीसगढ़ी का प्रचलित क्षेत्र

द. कोसली के नाम से प्रसिद्ध यह बोली चेदी राजाओं के प्रदेश चेदिसगढ़ की बोली के रूप में इतिहास में स्थान रखती है। इसकी प्रचलित का क्षेत्र बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग जैसे जिले हैं। पूर्वी हिन्दी उपभाषा की अन्य बोलियों से समानता रखते हुए भी अपनी कुछ विशेषता विशिष्टता भी यह बोली रखती है।

ध्वनिगत विशेषताएँ

(क) ध्वनियों में परिवर्तन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदा०

- स - 'छ' — सीता - छीता
सीढ़ियाँ - छिढ़ियाँ

- श/ष - स - भाषा - भासा

(ख) इस भाषा में प्रमुख रूप से दो शब्दों के बीच की 'त' व 'छ' ध्वनि को जोड़कर एक शब्द बनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है जैसे-
- करत चन (करते हैं)

(ग) छत्तीसगढ़ी की एक अन्य विशेषता 'छमन' जैसे सर्वनामों के प्रयोग की भी है।

(घ) यहाँ उकरांतता की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है जैसे- जोगू

व्याकरणिक विशेषता

(i) संज्ञा के स्तर पर अवधी के बजाय यहाँ केवल एक ही रूप मिलता है।

(ii) आनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति भी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिलती है।

परसर्ग
कर्त्ता - नै, ने
करम - कु, कूँ
संबंध - का, केर, केरा

क्रिया रूप
वर्तमान - त रूप
भूतकाल - 'स' व 'व' रूप

इस प्रकार छत्तीसगढ़ी भाषा एक राज्य के क्षेत्र में सिमटकर भी अपनी विशेषताओं के स्तर पर अद्वितीय है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी अमीर-खुसरो ने सूफी संत, संगीतज्ञ, इतिहासकार होने के साथ-साथ हिन्दी साहित्य में साहित्य व भाषा-विकास के स्तर पर विशिष्ट योगदान दिया है। उनका भाषा व शब्दकोशीय ग्रन्थ खलिकबारी है।

खड़ी बोली का विकास यदि आदि-काल के किसी रचनाकार के यहाँ देखना हो तो वे अमीर खुसरो ही हैं। उनकी भाषा आज की खड़ी बोली के समीप है। कारण यह है कि वे उसी वातावरण (दिल्ली सल्तनत) में रहकर रचना कर रहे थे जिसमें आगे चलकर खड़ी बोली का विकास हुआ।

खुसरो की पहेलियों व मुकरियों में तो खड़ी बोली आज के हू-ब-हू रूप में नज़र आती है जैसे –

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ पर न केवल शब्दकोशीय स्तर पर, अपितु व्याकरण के स्तर पर भी खड़ी बोली का विकसित रूप मिलता है।

कई जगह खुसरो ने ब्रजभाषा व खड़ी बोली के मिश्रित प्रयोग भी किये हैं। जैसे आगामी पद में 'वाकी' शब्द के अलावा अन्य पद खड़ी बोली के हैं:-

"खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार"

इस प्रकार के प्रयोगों को देख शुक्ल जी ने कहा भी है -

"क्या उस समय तक भाषा घिसकर इतनी चिकनी हो गयी थी, जो खुसरो की पहेलियों में मिलती है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

हिन्दी साहित्येतिहास में भक्तिकाल में निर्गुण भक्ति काव्यधारा में संतों के काव्य का प्रमुख योगदान है। इसमें कबीर, रैदास, सुंदरदास, रज्जब व मलूकदास जैसे संत आते हैं। इनकी भाषा भी विभिन्न स्थानों के उपादान लेकर पंचमेल खिचड़ी के नाम से जानी जाती है।

संतों में सर्वोपरी नाम 'कबीरदास' जी का है। इन्होंने अपने दोहों में खड़ी बोली का मिश्रित रूप दिखाई देता है। जैसे कि निम्न उदाहरण में 'दर-बदर' जैसे फारसी प्रयोग व 'हमन' जैसे पूर्वी प्रयोग के अलावा शेष ढाँचा खड़ी बोली का आभास देता है-

"जो बिछुड़े हैं प्यारे से,
भटकते दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें
हमन को इंतजारी क्यों"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर के अलावा रैदास के पदों - "कहै रविदास खलास चमारा" हो या रज्जब के पद - 'घर में गंगा, घर में जमुना' - में खड़ी बोली का निदर्शन होता है।

एक अन्य संत मलूकदास का यह पद तो मानों आधुनिक खड़ी बोली को पढ़ने का अनुभव करा देता है -

"अजगर करै न चाकरी,
पंछी करै न काम
दास मलूका कह गये,
सबके दाता राम।"

इस प्रकार संतों ने अपनी सधुक्कड़ी या 'पंचमेल खिचड़ी' नुमा भाषा के द्वारा खड़ी को विकसित किये रखा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'कुमाऊँनी' बोली

खस प्राकृत → खस अपभ्रंश → पहाड़ी हिन्दी उपभाषा

↙ ↘

कुमाऊँनी गढ़वाली

(बोलियाँ)

कुमाऊँनी बोली क्षेत्र

प्रचलित क्षेत्र :- नैनीताल, अल्मोड़ा व पिथौरागढ़ जिला।

इस बोली पर आर्य भाषा संस्कृत के साथ-साथ अनार्य भाषाओं जैसे तिब्बती-बर्मी मूल की भाषाओं का प्रभाव पड़ा था किन्तु शनै-शनै इस पर ब्रजभाषा, मारवाड़ी व पंजाबी का प्रभाव पड़ना शुरू हो गया। दोनों बोलियों के प्रयोक्ता वर्ग की संख्या 50 लाख से भी कम होने के कारण इसमें साहित्यिक विकास की प्रवृत्तियाँ कम हैं।

प्रमुख विशेषताएँ —

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) महाप्राण का अल्पप्राणिकरण जैसे - हाथ - हॉत (खड़ी बोली का प्रभाव)

(ख) 'आनुनासिकीकरण' की प्रवृत्ति जैसे - हाथों, पैसों।

(ग) राजस्थानी के प्रभाव से ओकारांतता की प्रवृत्ति - उदा० - घोड़ो, कालो।

(घ) अन प्रत्यय के द्वारा पुल्लिंग बहुवचन का निर्माण - घोड़ा - घोड़न

(ङ) ळ व 'ण' ध्वनियों का प्रयोग।

(च) भविष्य 'ला' रूप, उदा० - 'चलला'

(छ) ब्रज के प्रभाव से वर्तमान में चल्यौ जैसे प्रयोग।

(ज) प्रमुख सर्वनाम - ले, कणि आदि।

इस ~~जहाड़ी पहाड़~~ प्रकार पहाड़ी हिन्दी वर्ग में कुमाऊँनी प्रमुख स्थान रखकर भारतीय बोलियों के वैविध्य में अपना योगदान देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा और बोली में अंतर की बात करें तो साधारणत: इनका अंतर भाषावैज्ञानिक न होकर समाजभाषावैज्ञानिक होता है। कोई भी बोली जो अपनी अन्य बोलियों से उच्च स्थान ग्रहण कर अपनी प्रयुक्ति का क्षेत्र बढ़ा लेती है व मानक रूप ग्रहण कर लेती है उसे भाषा कह दिया जाता है। इसमें सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक आदि कारकों का योगदान रहता है। उदाहरण के लिये आधुनिक काल में खड़ी बोली का विभिन्न कारणों से भाषा के रूप में उदय।

फिर भी विश्लेषण के लिये इनमें कुछ अंतर निकाले जा सकते हैं जैसे-

भाषा	बोली
(i) प्रयुक्ति का क्षेत्र विशाल (भौगोलिक)	- तुलनात्मक रूप से कम
(ii) इसकी एक लिपि होती है।	- लिपि नहीं होती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) स्पष्ट व्याकरण	व्याकरणिक नियमों का अभाव।
(iv) राजनैतिक प्रभाव से स्थापित की जा सकती है जैसे - चीन में मंदारिन भाषा।	— ऐसा नहीं किया जा सकता।
(v) विषय-वस्तु के स्तर पर व्यापकता जैसे - साहित्य, पत्राचार, विज्ञान, वाणिज्य में प्रयोग।	- केवल आंचलिक स्तर पर बोलचाल में प्रयुक्त।
(vi) स्थिर व मानक रूप। शब्दों के स्तर पर वस्तुनिष्ठता।	= परिवर्तनशील व अमानकता। सेगानुसार परिवर्तित।

इस प्रकार निम्न प्रमुख अंतरों के साथ भाषा व बोली के मध्य विभाजन रेखा खींची जा सकती है। अतः इनमें बीज व वृक्ष का संबंध माना जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

हिन्दी के विकास में राष्ट्रीय आंदोलन के समानांतर देश की राष्ट्रभाषा -व राजभाषा आदि बनाने के स्तर पर जिन लोगों का नाम लिया जाता है, टंडन जी उसमें अगली पंक्ति के नेता नज़र आते हैं।

इन्हें 'हिन्दी का नेहरू' कहा जाता है। महात्मा गांधी के अनुयायी के रूप में इन्होंने भारत में अनेक स्थानों पर घूमकर हिन्दी का प्रचार किया। ये हिन्दी को अत्यन्त वैज्ञानिक लिपि मानते थे। लाला - लाजपतराय के साथ मिलकर इन्होंने पंजाब व लाहौर आदि में हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलनों में कभी संयोजक की दृष्टि से तो कभी व्यवस्थापक की दृष्टि से इन्होंने हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि के मानकीकरण की वकालत की। इन्हीं के सुझावों से महात्मा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गांधी ने 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की सदस्यता ग्रहण की। लाला लाजपतराय की मृत्यु के बाद इन्होंने 'लोकसेवा मंडल' के सभापति का कार्यभार संभाला व उत्तर-पश्चिम भारत में हिन्दी का प्रचार किया।

इनका प्रमुख वचन है -

"मैं हिन्दी के प्रचार को राष्ट्रीयता के प्रचार का प्रमुख अंग मानता हूँ। भाषा ऐसी राष्ट्रभाषा हो जिसे समस्त समस्त प्रान्तों के लोग समझ सकें।"

इस प्रकार हिन्दी के विकास में टंडन जी का योगदान अविस्मरणीय है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'राजस्थानी हिन्दी' पर प्रकाश डालिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राजस्थानी प्रकृत के रास्ते आगे चलकर राजस्थानी अपभ्रंश का निर्माण हुआ।

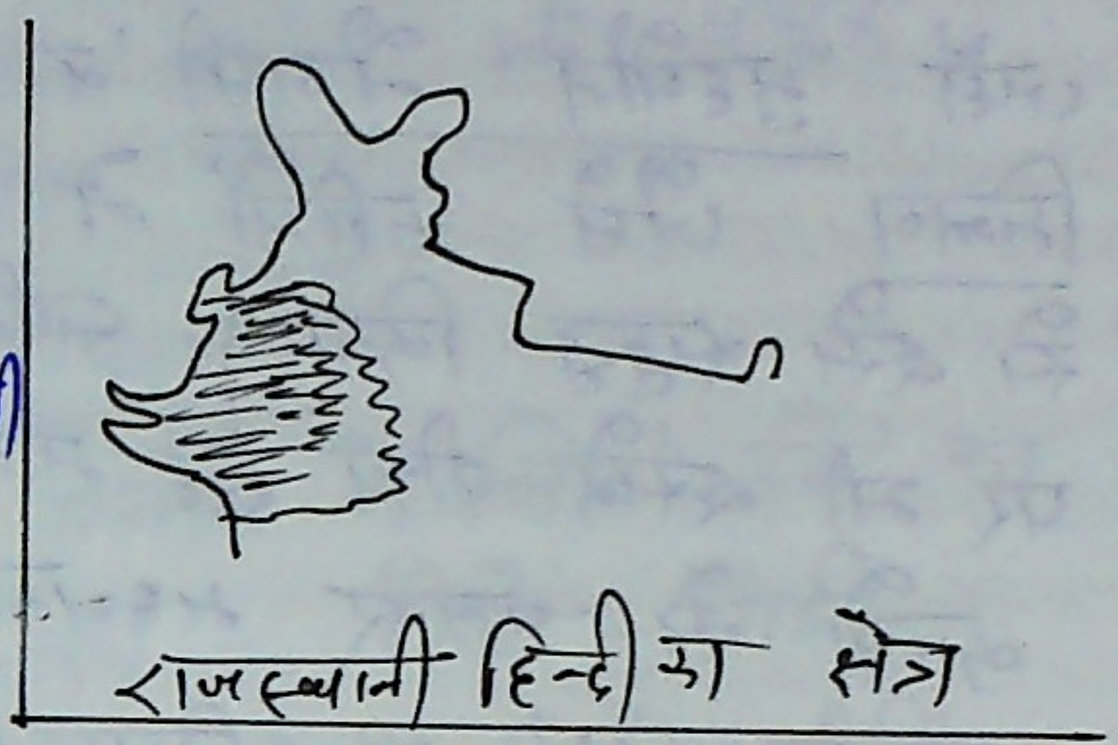

इसी अनुरूप इतिहास की शक्तियों के द्वारा धीरे-धीरे यही अपभ्रंश राजस्थानी हिन्दी उपभाषा के रूप में विकसित हुई। इस उपभाषा के चार भेद हैं

(i) मारवाड़ी (ii) मेवाती

(iii) मालवी (iv) जयपुरी / ढुंढाणी

प्रयोक्ता क्षेत्र की दृष्टि से इस भाषा में संपूर्ण राजस्थान के साथ-साथ मालवा व सिंध के भी कुछ क्षेत्र आते हैं। इसके प्रयोक्ताओं का क्षेत्र व जनसंख्या अत्यन्त बड़ी है जो 5 करोड़ के आसपास है। साहित्यिक दृष्टि से भी राजस्थानी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

एक विकसित व समृद्ध भाषा रही है जहाँ 'मुहणौत नैणसी' व सूर्यमल्ल मिश्रण जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध किया। साहित्य के स्तर पर भी इसके बीच कुछ मात्रा में रासो काव्यों से चलकर मध्यकालीन 'ढोला मारू रा दूहा' तक विद्यमान मिलते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

ध्वनिगत

(क) 'ट' वर्ग बहुला भाषा

(ख) 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग जैसे कौन - कुण

(ग) महाप्राण के अल्पप्राणीकरण के प्रवृत्ति - हाथ - हात।

(घ) पुल्लिंग एकवचन में ओकरांतता की प्रवृत्ति व स्त्रीलिंग एकवचन की में ईकरांतता की प्रवृत्ति जैसे - छोरो, काळो, छोरी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मराठी में प्रचुरता होने वाली 'ळ' ध्वनि का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में होता है।

व्याकरणिक विशेषताएँ

(अ) स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ओ' का ई में रूपान्तरण - घोड़ा - घोड़ी

(ब) बहुवचन बनाने के लिये स्त्रीलिंग एकवचन में 'ओं' प्रत्यय का प्रयोग। जैसे - बात- बातों

(ग) पुल्लिंग एकवचन में आकारांत (बहुवचन) - हीरो - हीरा

(घ) सर्वनामों के स्तर पर म्हारो, थारो, कुण, के, कीने जैसे प्रयोग।

(ङ) कारक व्यवस्था
- कर्त्ता - नै
- कर्म - सूँ
- संबंध - रा, रै, री

अन्य स्तरों पर यदि इसके भेदों में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कुछ विशिष्टताओं की बात करें तो मालवी में आदि स्वर का दीर्घीकरण व महाप्राण का अल्पप्राणीकरण प्रमुख है
जैसे- लकड़ी - लाकड़ी
मुझे - मुजे

- मारवाड़ी की विशेषताएँ उपर्युक्त राजस्थानी हिन्दी के समान है जबकि जयपुरी में के, कीने जैसे सर्वनामों, काई (क्या के अर्थ में), 'ह' का प्रयोग जैसी विशेषताएँ द्रष्टव्य है।

इस प्रकार अपनी प्रकृति में विशिष्टता व अनूठापन दर्शाने वाला यह वर्ग हिन्दी की समृद्ध भाषाओं में से एक माना जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

ईसा की शताब्दियों के आरंभिक वर्षों में जैन व बौद्ध धर्म ग्रन्थों में 'कोसली' के नाम से जानी जाने वाली भाषा ही आगामी ऐतिहासिक शक्तियों से प्रभावित व अपभ्रंश के रास्ते अवधी में पर्यवसित हो गई। इसके प्रयुक्ति के प्रमुख क्षेत्र 'राम' के मिथक के जन्मस्थान अयोध्या के आस-पास का है। अन्य जिले लखनऊ, बहराइच, सीतापुर आदि है।

अवधि में रचित साहित्य पर चर्चा करें तो अमीर खुसरो के खलिकबारी से शुरू होकर रोडा कृत 'राउरबेलि' व दामोदर पंडित कृत 'उक्ति-व्यक्ति

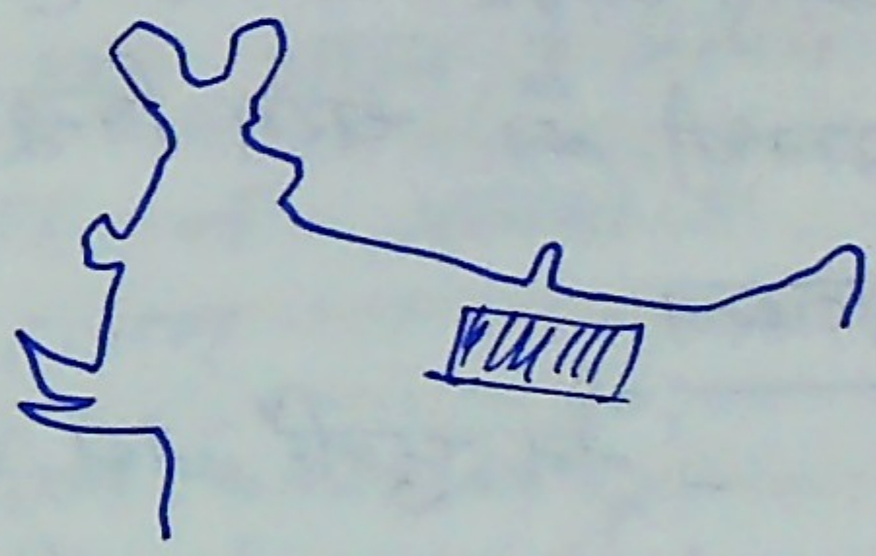

अवधी का क्षेत्र

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रकरण ' से शुरू होकर जायसी व तुलसी के हाथों से निकलकर यह उच्च स्तर तक पहुँचती है।

जायसी ने अवधी में अपने प्रेमाख्यानकों (पद्मावत, अखरावट) आदि के माध्यम से लोकगाथा के बड़ी पूंजी के साथ अवधी का अप्रतिम विकास किया है तो तुलसीदास ने भी संस्कृत के अवधीकरण के साथ, अपने नाद सौंदर्य व अनुप्रास की छटा से अवधी को चरम बिन्दु तक पहुँचा दिया।

उदाहरण -

- 'नैन चुवहिं जस महवट नीरू' (जायसी)

- 'लोचनु जल रहे लोचन कोना (तुलसी)
जैसे परम कृपन कर सोना'

शुक्ल जी के शब्दों में 'जायसी की भाषा का माधुर्य निराला है' तो तुलसी की पहुँच लोकभाषा के साथ संस्कृत के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चाशनी के भंडागार' तक भी पूरी-पूरी थी।'

व्याकरणिक विशेषताएँ

ध्वनिगत

(i) उकरांतता की प्रवृत्ति - रामु, किसानु।

(ii) ध्वनि परिवर्तन ड़ - 'र' - परहा
व - ब - बिस्व
ण - न - बाण - बान

व्याकरण

(i) संज्ञा के तीन रूप - घोरा, घोरवा, घोरउना

(ii) क्रियार्थ संज्ञाओं में इबो प्रत्यय - जाइबो

(iii) लिंगपरिवर्तन - इया, आइन, ई प्रत्यय।

(iv) वचन - न्ह, न प्रत्ययों से
हाथन्ह

(v) निर्विभक्तिक प्रयोगों के उदाहरण
रामदरस गिरी गई कलुसाई।

(vi) भूतकाल - स व 'व' रूप
वर्तमान - त रूप
भविष्य - 'अ' रूप

इस प्रकार अवधी अपनी विशेषताओं में हिन्दी भाषा में प्रमुख स्थान रखती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

रहीम या अब्दुल रहीम खानखाना का साहित्य अकबर के दरबार में लिखा गया था। बहुभाषी होने के कारण रहीम के काव्य में अनेक भाषाओं का समन्वय है जैसे -

बरवै नायिका भेद - अवधी

दोहावली - ब्रजभाषा

किन्तु रहीम की एक अन्य रचना 'मदनाष्टक' खड़ी बोली के ठीक-ठाक विकास का आभास देती है।

रहीम के साहित्य में खड़ी बोली शाब्दिक स्तर पर ही है, व्याकरणिक स्तर पर नहीं है जैसे -

"रहिमन पानी राखिये
बिनु पानी सब सून
पानी गए न ऊबरे
मोती मानुस चून"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ पर 'पानी', 'सून', 'बिन' जैसे शब्द खड़ी बोली का आभास देते है।

एक अन्य दोहे में 'नरन', 'दुहूँ' आदि शब्दों को छोड़कर शेष दोहा खड़ी बोली का आभास देता है.

"रहिमन ओछे नरन सों
बैर भली न प्रीत
काटे चाटे स्वान के दुहूँ
दुहूँ भाँति विपरीत"

इस प्रकार रहीम की अन्यरचना मदनाष्टक एक क्रान्तिकारी उदाहरण है जहाँ खड़ी बोली न केवल शाब्दिक स्तर पर बल्कि व्याकरणिक स्तर पर भी प्रतिष्ठित हुई दिखाई दे जाती है जैसे-

"पकरि परम प्यारे साँवरे को मिलाओ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ"

इस प्रकार रहीम की संवेदना, शिल्प के साथ उस ऐतिहासिक वातावरण का भी प्रभाव (मुगलकाल) है जो कि खड़ी बोली रहीम के काव्य में नज़र आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation